प्रकाशन की तिथि 01.08.2024

ओ३म्

एक प्रति मूल्यः रू. 5.00

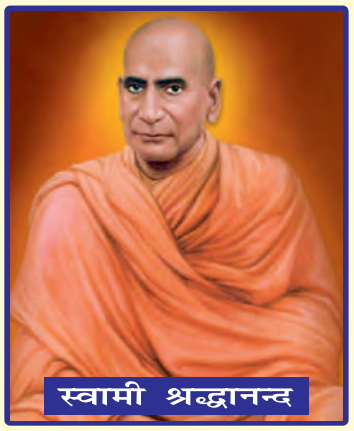

शुद्धि समाचार

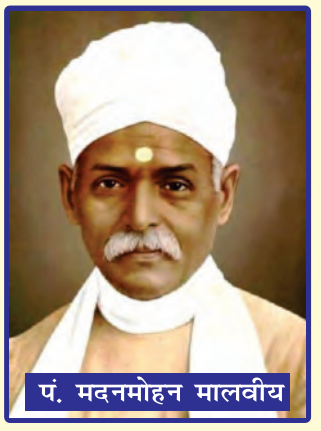

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 48 अंक 08 "शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है" वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 500 रुपये

अगस्त 2024 विक्रम सम्वत् 2081 श्रावण-भाद्रपद सनातन धर्मी नेता- पं. मदनमोहन मालवीय मोबाइलः 8368008215

परामर्शदाताः श्री हरबंस लाल कोहली श्री रणवीर सिंह श्री सुभाष चन्द्र दुआ श्री सुरेन्द्र गुप्त प्रबन्धकः श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

बस्तर में 20 लोगों ने ईसाईयत को त्याग सनातन धर्म में की घर वापसी

बस्तर जिले में महारा समुदाय की ओर से कभी भटक कर दूसरे पंथों में चले गए अपनों को वापस सनातन जड़ों की ओर लौटाने के लिए महारा समाज की ओर से शुद्धि यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत महारा समुदाय द्वारा बस्तर संभाग के अंतर्गत आने वाले जगदलपुर जिले के हाटपदमूर गांव के रहने वाले 4 परिवारों से संपर्क किया गया। इन चारों परिवारों ने 20 वर्ष पूर्व ईसाई मिशनरियों द्वारा ब्रेनवॉश कर इन्हें ईसाई बना दिया। हालांकि, ये सभी जन्म से हिन्दू ही थे अतरू ये सनातन धर्म से प्रभावित थे । इसी बीच जब महारा समाज के लोगों ने

(शेष पृष्ठ 7 पर)

इंदौर में 5 ईसाई सनातन धर्म में लौटे

मध्य प्रदेश के इंदौर में 5 ईसाई सदस्यों के परिवार ने धर्म में वापसी की। रोनाल्डो, राहुल तो रोजी, सनातनी बुलबुल बन गई। ईसाई मत के 5 लोगों ने घर वापसी की और हिंदू धर्म अपना लिया। इनकी इंदौर के खजराना मंदिर में 25.07.2024 को धर्म में वापसी हुई, जहां शुद्धि यज्ञ से यह कार्य संपन्न किया गया। धर्म में वापसी के साथ इनका नाम भी

(शेष पृष्ठ 7 पर)

नरगिस ने स्वेच्छा से अपनाया सनातन धर्म

मुरादाबाद की नरगिस बिना किसी के दबाव आगे झुके स्वेच्छा से सनातन धर्म अपना लिया है। इसके बाद वह मंत्रोच्चार के बीच अपने दोस्त मुनेश के साथ विवाह के पवित्र बंधन में बंध गई। मुस्लिम परिवार में उत्पन्न नरगिस (परिवर्तित नाम) को सनातन संस्कार अच्छे लगते थे। इसी के चलते उसने हिन्दू धर्म में वापसी का फैसला कर लिया। इसके बाद वैदिक रीति से मुनेश के साथ उसका विवाह संपन्न हुआ।

'शुद्धि'

(वर्तमान परिवेश पर आधारित एक सशक्त एवं पठनीय उपन्यास)

(पिछले अंक का शेष) – लेखिका सुधा शर्मा

अशांत मन को शांत करने के लिए उसने टीवी का स्थानीय चौनल खोला और विज्ञापनों को ध्यान से सुना। मोबाइल का सहारा लिया। दो–चार स्थानीय विज्ञापनों पर उसकी आंखें ठिठक गई। बहुत सुंदर, आकर्षक विज्ञापन थे " घर, व्यापार की समस्या हो, बेरोजगार हो, प्रेम में धोखा खाया हो या प्रेम विवाह में अड़चन आ रही हो या प्रेमी या प्रेमिका बिछड़ गए हो या अन्य किसी भी तरह की समस्या हो, इस नंबर पर कॉल करके समस्या का समाधान पाइये। कोई भी समस्या ऐसी नहीं जिसका समाधान न हो। आप निराश होकर कभी नहीं लौटेंगे। ये हमारा वादा है। कभी भी सम्पर्क कर सकते हैं। हम चौबीस घंटे आपकी सेवा में हाजिर हैं। समय की छूट पढ़कर अखिल ने तुरंत फोन मिलाया। उधर से आने वाली आवाज जादुई थी। फोन पर अखिल ने मिलने का समय ले लिया। और नियत समय पर पहुँच गया।

फोन के माध्यम से अखिल शहर के बाहर वाले गिरजाघर में पहुँच गया। गिरजाघर का गेट बहुत बड़ा था। गेट में प्रवेश करते ही अनेक मूर्तियों के माध्यम से ईसा मसीह का जीवन चरित्र दर्शाया गया था। कहीं पर वह अपनी मॉ मैरी की गोद में थे

(शेष पृष्ठ 5 पर)

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

श्रीकृष्णः नीति और दर्शन की प्रासंगिकता

— अनुराग

श्रीकृष्ण की नीतियां और उनका दर्शन वर्तमान भारत की समस्याओं के लिए स्पष्ट समाधान है। सच तो यह है कि उनकी नीति और दर्शन, युग, धर्म नहीं बल्कि शाश्वत धर्म है किन्तु भारत की परम्परा रही है कि जो महामानव अपना समग्र जीवन और चिन्तन समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित कर देते हैं, कृतज्ञतावश उन्हें यह देश, महामानव, अतिमानव या भगवान् के विशेषणों से सम्मानित करता है। कालान्तर में उस महामानव के उपदेशों और कर्त्तव्य का अनुसरण करने की बजाय उसकी विराट्ता के अनुसरण को असंभव घोषित कर उसे मात्र उपास्य बना लिया जाता है।

कर्मयोग के महान् उपदेष्टा योगीराज कृष्ण के प्रसंग में भी ऐसा ही हुआ। जिन श्रीकृष्ण ने रणक्षेत्र में स्वजनों को देख कर मोहग्रस्त हुए अर्जुन को न्याय के लिए धर्मयुद्ध करने की प्रेरणा दी, उनके उस महान् कर्मप्रवण गीताज्ञान को निष्क्रिय तत्वज्ञान मान लिया गया। वस्तुतः राष्ट्र की कर्मचेतना को उद्‌बोधित करने वाले गीताज्ञान से प्रखर कोई दूसरा संदेश विश्व में अभी प्राप्य नहीं है। इसलिए श्रीकृष्ण की गीतापदेश भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन का प्राणत्व रहा। क्रान्तिकारियों ने गीता के अमर सन्देश को स्मरण कर ही देश के लिए फांसी के फन्दे चूमे। शंकराचार्य, श्री अरविन्द, तिलक, भाई परमानन्द से लेकर सन्त विनोबा तक ने गीता पर वाक्य लिखकर कर्म चेतना की अलख जगाई।

अमर दर्शन– गीता का वह अमर दर्शन क्या है जिसमें कृष्ण प्राण हथेली पर रखकर देश के लिए सर्वस्य न्यौछावर करने को प्रवृत पर विचार थोपने के विरूद्ध थे। उन्होंने कहा–

इति तेज्ञानमाख्यातं, गुह्याद्‌गुह्यतरं मया।
विमृश्यैतदशेषेण, यथेच्छसि तथा कुरु।। 18.63

अर्थात् मेरी कही बातों पर विचार करके तेरी

योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र ईश्वर का ध्यान करते हुए।

जैसी इच्छा हो तदनुसार कार्य कर।

महान् राजनीतिज्ञ– श्रीकृष्ण ज्ञानपुंज अतिमानव ही नहीं थे बल्कि वे लोकनायक भी थे, उस युग के सर्वमान्य व्यक्ति थे। पांच हजार वर्ष के लगभग बीतने पर आज भी उस यश को कोई पार नहीं कर पाया। उनकी श्रेष्ठता को उस काल के सर्वोपरि राजनीतिज्ञ भीष्म पितामह ने भी स्वीकारा था। इसीलिए महाराज युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ के समय भीष्म पितामह ने सर्व प्रथम, श्रीकृष्ण की प्रशंसा/गुणगान करने के लिए ही कहा। उन्होंने बताते हुए कहा था कि वे वेद–वेदांगो के मर्मज्ञ पंडित हैं। शस्त्रों और शास्त्रों में उनका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। वे सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी हैं।

सत्तालिप्ता से दूर– श्रीकृष्ण ने बिखरे राज्यों को एक सूत्र में पिरोकर भारत को महान् गणराज्य बनाने का उपक्रम किया। अन्यायी, आततायी और प्रजापीड़क शासकों को हटा कर वे देश की जनता के हृदय सम्राट बन गये। मथुरा में कंस को मार कर उनके पिता उग्रसेन को उसकी सत्ता सौंपना संघर्ष में सारी मर्यादाओं को त्याग देने वाले राजनीतिज्ञों के लिए अनुकरणीय है। श्रीकृष्ण की इसी त्याग भावना के कारण तत्कालीन भारत एक महान् गणराज्य बन सका था।

चिंतन का दूसरा पक्ष यह है कि श्रीकृष्ण ने एक केन्द्रीय शक्ति की स्थापना तो की परन्तु कुरु कुल के गृह कलह के कारण वह स्थिर न रह सकी। उन्होंने अथक प्रयास किए किन्तु वे कौरव–पांडव युद्ध को रोक न सके तभी उन्हें न्याय का पक्ष का संबल बनना पड़ा।

विजयी राष्ट्र का आत्म विश्वास– यद्यपि प्रत्यक्ष रूप में ऐसा लगता है कि भारत को महान् शक्ति सम्पन्न बनाने का श्रीकृष्ण का संकल्प सफल नहीं हो सका किन्तु युगीन घटनाचक्र के विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि भयंकर उथल पुथल के उस युग में देश को शक्ति और ऐश्वर्य के चरम शिखर पर ले जाना उनके राजनीतिक, कौशल और चातुर्य से ही संभव हो सका।

वैसे भी किसी महापुरुष की महानता का मूल्यांकन उसकी परिपूर्ण सफलता के आधार पर नहीं बल्कि समग्र व्यक्तित्व और कृतित्व से पड़ने वाले व्यापक प्रभाव से ही किया जा सकता है।

कोई भी राष्ट्र अपने नागरिकों में विषयिष्णु प्रवृत्ति के बिना जीवित नहीं रह सकता। खासतौर पर आज के युग में जागरूक और संघर्षशील राष्ट्र ही अपनी स्वतन्त्रता बनाये रख सकते हैं। आज जबकि देश अनेक प्रकार की दुरभिसंधियों से घिरा है, श्रीकृष्ण का प्रखर विजय दर्शन ही हमारा मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

महर्षि दयानन्द के आर्य समाज वेद व स्वयं सम्बन्धी विचार

— खुशहाल चन्द्र आर्य

1. जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्‌देश्यानुसार आचरण स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थो से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन, से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा ''आर्य समाज' आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता।

2. मैं जैसा सत्य धर्म की उन्नति और स्वदेश का उपकार होने में प्रसन्न होता हूं, वैसा किसी अन्य बात पर नहीं।

3. मैं तो अपना तन, मन, धन सब कुछ सत्य के ही प्रकाशनार्थ समर्पण कर चुका। मुझसे खुशामन्द करके अब स्वार्थ का व्यवहार नहीं चल सकता। किन्तु संसार का लाभ पहुंचाना ही मुझे राज्य के तुल्य है।

4. मेरा तात्पर्य किसी की हानि का विरोध करने में नहीं, किन्तु सत्यासत्य के निर्णय करने–कराने का है।

5. मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं, जो कि तीन काल में सबको एकसा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेश मात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।

6. वैदिक धर्म प्रचार का कार्य बहुत अच्छा है। हम जानते हैं कि हमारे सारे जीवन में पूरा न हो सकेगा। परन्तु चाहे दूसरा जन्म धारण करना पड़े, मैं इस महत् कार्य को अवश्य ही पूर्ण करूंगा।

7. मैंने कोई या पंथ चलाकर गुरुगद्‌दी वा मठ नहीं बनाया है। मैं तो लोगों को मठवादियो के मठो से स्वतन्त्र करना चाहता हूँ।

8. मैं अपने सामर्थ्य के अनुसार वेद का उपदेश करता हूँ। सिवाय उपदेशक के और मैं कुछ अधिकार नहीं चाहता।

9. मैंने इस धर्म कार्य का सर्वशक्तिमान्, सत्याग्राहक और न्याय सम्बन्धी परमात्मा को शरण में शीशधर उसी के सहाय के अवलम्ब से आरम्भ किया है।

10. चाहे कोई हो, जब तक मैं न्यायाचरण देखता हूं और जब अन्यायचरण प्रकट होता है, फिर उससे मेल नहीं करता।

11. मैंने आर्य समाज का उद्यान लगाया है, इससे मेरी अवस्था एक माली की सी है। पौधों में खाद डालते समय, राख और मिट्‌टी माली के सिर पर पड़ ही जाया करती है। मुझ पर राख और धूल चाहे कितना पड़े, मुझे उसका कुछ भी ध्यान नहीं, परन्तु वाटिका हरी–भरी रहे और निर्विध्न फूल–फले।

12. मेरी अन्तःकरण से यही कामना है कि भारतवर्ष के एक अन्त से दूसरे अन्त तक आर्य समाज स्थापित हो और देश में व्यापी हुई कुरीतियों का उन्मूलित हो जाएं।

13. मेरा कोई नवीन कल्पना का मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना–मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना–छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त में प्रचारित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता।

14. यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान लोग अन्यथा ही विचारेंगे तथापि बुद्धिमान लोग यथायोग्य इसका अभिप्राय प्राय समझेंगे, इसलिए मैं अपने परिश्रम को सफल समझते हुए अपना अभिप्राय सह सज्जनों के सामने धरता हूं। इसको देख–दिखला के मरे श्रम को सफल करें और इसी प्रकार पक्षपात न करके सत्यार्थ का प्रकाश करना मेरा वा सब महाशयों का मुख्य कर्तव्य काम है। सर्वान्तर्यामी, सच्चिदानन्द परमात्मा अपनी कृपा से इस आशय को विस्तृत और चिरस्थार्थ करे।

15. बारहवें समुल्लास म.जा.जा. जैनियो के मत के विषय में लिखा है, सौ–सौ ग्रन्थों के पतेपूर्वक लिखा है। इसमें जैनी लोगों को बुरा न मानना चाहिए क्योंकि जो–जो हमने मत विषय में लिखा है, वह केवल

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म है

❑ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, मो. 9810884124

इस मास में श्रावणी तथा जन्माष्टमी जैसे महत्वपूर्ण पर्व आर्यों द्वारा सोत्साह मनाए जायेंगे। श्रावणी का सम्बन्ध वेदों के स्वाध्याय तथा जन्माष्टमी योगेश्वर श्रीकृष्ण के पावन जीवन से सम्बद्ध है। आर्य जाति का स्वतव वेद और प्रेरणास्रोत वैदिक मर्यादाओं के पालन कर्ता श्रीकृष्ण वैसे महामानवों के जीवन पर आधृत हैं। सदियों से आर्यजाति अपने इन पूर्व पुरुषों महापुरुषों से प्रेरणा प्राप्त कर अनुप्राणित होती रही है। कालक्रम से विकृतियाँ भी जाती रही है। वर्तमान में एक बहुत बड़ा जीवन समुदाय वेद तथा वैदिक विचार धारा से दूर जाकर विकृति का पात्र बन गया है और वैदिक मर्यादाओं के संवाहक राम तथा श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों के पावन जीवन में सांस्कृतिक विकृति उत्पन्न कर, उसी का उपासक होकर रह गया है। महाभारत काल के पश्चात् रचित पौराणिक साहित्य ने इस विकृत सांस्कृतिक विस्तार को प्रचुर प्रोत्साहन प्रदान किया है। ऋषि दयानन्द ऐसे प्रथम महापुरुष हैं जिन्होंने ऊर्जस्वी व्यक्तिक्त से इस अन्धविश्वास को विध्वस्त करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है। अपने जीवन काल में ही उन्होंने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहरा कर इस विकृति का साहसिक विरोध किया तथा आर्य सन्तानों को वैदिक मान्यताओं की ओर, ऋषि-मुनियों की निष्पाप, विश्वकल्याणकारी जीवन शैली की ओर चलने की प्रेरणा प्रदान की। आज आर्य जाति की दुर्दशा का एक मात्र कारण वेदमार्ग से उसका भटक जाना है। ऋषि दयानन्द ने श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों के जीवन से जुड़ी प्रत्येक विकृति को अस्वीकार कर उन्हें वैदिक परम्पराओं से सुसंस्कृत महामानव का सम्मान दिया। उन्होंने धार्मिक सामाजिक, राजनीतिक, मर्यादाओं के लिए ही नहीं अपितु समस्त कर्तव्य कर्म में सुचिता के लिए वेदों को प्रमाण माना और उसी के अनुसार जीवन यापन की प्रेरणा प्रदान की। श्रावणी पर्व का सम्बन्ध वेद तथा वैदिक वाङ्मय के स्वाध्याय से जुड़ा है। वेद का स्वाध्याय और तदनुरूप जीवन निर्माण ही मनुष्य का परम धर्म है। इस सम्बन्ध में ऋषि का कहना है कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है। यह वाक्य प्रत्येक आर्य के लिए विशेष रूप से विचारणीय है। आज आर्य यदि श्रीकृष्ण जैसे तेजस्वी बनने का संकल्प लें, वैदिक मर्यादा में उस तेज को धारण करें, पाखण्ड, अन्याय, अत्याचार के नाश के लिए श्रीकृष्ण की तरह दृढ़ता से संकल्प सिद्ध होकर सामने आएं तो आसूरी वातावरण निश्चित रूप से नष्ट हो जाएगा। दुर्भाग्य यही है कि आज हम महापुरुषों का नाम लेते हैं पर उनके गुणों को धारण करने में हमारी रूचि नहीं होती। हम उस सदुर्शन चक्रधारी, असुर गण विनाशक, वेद-विद्या निष्णात श्रीकृष्ण जैसे तेजस्वी बन कर विश्व को सुख-समृद्धि की ओर लायें। छोटा सा दीपक अपने तेज से अपार अन्धकार को समाप्त कर प्रकाश कर देता है। जिसमें तेज होता है वही बलवान होता है। योगी भर्तुहरि के शब्दों में **''तेजो यस्य विराजते स बलवान् स्थूलेषु कः प्रत्ययः।''** परमात्मा आर्य जाति को तेजस्वी बनायें हममें अपने दिव्य तेज का आधान करें। **''तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।''**

स्वामी श्रद्धानंद जी के हाथों शुद्धिकृत

असगरी बेगम से बनी शांतिदेवी के परिवार की कहानी

एक ऐसी एक्ट्रेस जो कम उम्र में फिल्में करने लगी थीं. उनकी लोकप्रियता पूरी फिल्म इंडस्ट्री में बढ़ी और ये एक्ट्रेस लतीफे भी सुनाती थीं. उस एक्ट्रेस का नाम तबस्सुम था। एक्ट्रेस जो नाम से थी मुस्लिम और धर्म से थी हिंदू, कम उम्र से शरू कर दीं फिल्में, पहचाना क्या?

बेबी तबस्सुम के तौर पर उन्होंने ढेरों फिल्में कीं और उसके बाद भी कई फिल्मों में नजर आईं, लेकिन तबस्सुम ज्यादा अपने इंटरव्यूज को लेकर फेमस हुईं, 9 जुलाई तबस्सुम को 80वीं बर्थ एनिवर्सरी है और इस मौके पर चलिए आपको उनसे जुड़ी कुछ सुनी–कुछ अनसुनी बातें बताते हैं। 9 जुलाई 1944 को मुंबई में किरण बाला का जन्म हुआ जिसके पिता हिंदू अयोध्यानाथ सचदेव थे और मां मुस्लिम, पूर्व नाम असगरी बेगम किंतु शुद्धि उपरांत शांति देवी था. अयोध्यानाथ भारतीय फ्रीडम फाइटर थे, वहीं इनकी मां असगरी बेगम भी स्वतंत्रता सेनानी, लेखक और जर्नलिस्ट थीं।

एक इंटरव्यू में तबस्सुम ने कहा था, 'मेरे पिता ने मुझे 'तबस्सुम' नाम दिया लेकिन मेरी मां का धर्म मेरे माइंड में रहा, मेरी मां ने मुझे 'किरण बाला' नाम दिया और मेरे पिता का धर्म भी मेरे माइंड में रहा. ऑन पेपर मेरा नाम किरण बाला था जो शादी के बाद किरण बाला गोविल हुआ। मेरे पिता का दिया नाम मैंने फिल्मों में रखा और दुनिया मुझे इसी नाम से जानती है।

तबस्सुम ने विजय गोविल के साथ शादी की थी जो टीवी एक्टर अरुण गोविल के बड़े भाई थे. अरुण गोविल को आपने फेमस सीरियल 'रामायण' में भगवान राम का रोल प्ले करते देखा होगा. रिश्ते में तबस्सुम गोविल एक्टर अरुण गोविल की भाभी थीं. तबस्सुम और विजय गोविल के बेटे होशंग गोविल ने फिल्मों में काम किया लेकिन फ्लॉप रहे परंतु बतौर प्रोड्यूसर अब वो काम करते हैं, साथ ही अपनी मां के इंटरव्यू वाले यूट्यूब चौनल को भी मैनेज करते हैं. साल 2007 में विजय गोविल का निधन हो गया था. वहीं 18 नवंबर 2022 को तबस्सुम गोविल का भी निधन हो गया था।

तबस्सुम ने साल 1947 में आई फिल्म मेरा सुहाग में नरगिस के बचपन का रोल प्ले किया था तब तबस्सुम महज 4 साल की थीं। इसके बाद उन्होंने बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट कई फिल्में कीं. बड़े होने पर भी तबस्सुम ने 'दीदार', 'जोगन', 'बहार', 'बड़ी बहन', 'संग्राम', 'अफसाना' जैसी कई फिल्मों में काम किया है. साल 1972 में तबस्सुम का शो फूल खिले गुलशन–गुलशन आता था जिसमें वो एंकर थीं और दूरदर्शन पर ये शो काफी चला था ।

तबस्सुम को ज्यादातर एक्टर्स छोटी बहन मानते थे जिनमें राजेश खन्ना, सुनील दत्त, राज कपूर जैसे दिग्गजों के नाम शामिल हैं। वहीं दिग्गज फिल्ममेकर बी आर चोपड़ा उन्हें बेटी मानते थे। तबस्सुम ने लगभग सभी सितारों का इंटरव्यू लिया है और कुछ साल पहले उन्होंने अपना यूट्यूब चैनल 'तबस्सुम टॉकीज' शुरू किया था जिसे अब उनके बेटे चलाते हैं।

ईश्वर एक तो धर्म...

ईश्वर एक तो धर्म अथवा पूजा पद्धति भी एक ही होगी। हिंदू समाज आज तक अपनी एक पूजा पद्धति निर्धारित नहीं कर पाया अनेक पाखंडों के चक्कर में फंसा पड़ा है। गजवा ए हिंद की तैयारी जोरों पर है कल का हिंदू आज का मुसलमान एकजुट हो रहा है। ईसाई धर्मांतरण तेजी से भारत भर में फैल रहा है। खालिस्तानी मूवमेंट जोरों पर है। अभी भी समय है हिंदुओ के ठेकेदारों दंभ से बाहर आकर एक हिंदू पूजा पद्धति को स्थापित करना चाहिए। ईसाई ,वामपंथी विचारधारा संसद से हिंदुओ को बरगलाने का काम करती आ रही है और हिंदू ये सब देख रहा है। अल्लाह के नाम पर सब कल के हिंदू आज के मुसलमान एक हो जाते है मुल्ला मौलवी मौलाना आदि आदि सफल हो जाते है जबकि हिंदू धर्म के पाखंडी ठेकेदार पंडे पुजारी धर्माचार्य मठाधीश शंक्राचार्य नकारा साबित होते है।

जीसस के नाम पर कल के हिंदू आज के ईसाई भी सब एक मत हो जाते है जिसमे कुआरां बाप अर्थात पादरी कामयाब हो जाता है जबकि हिंदू धर्म के पाखंडी ठेकेदार पंडे पुजारी धर्माचार्य शंकराचार्य आदि आदि असफल साबित होते है।

तुम चार पीढ़ियों से
मुस्लिम हो तो तुम्हें
इस्लाम इतना अजीज है
मैं अनादिकाल से
सनातनी हूँ!
मेरे गर्व की कल्पना भी
नहीं कर सकते तुम।

बरेली में 2 मुस्लिम युवतियों ने स्वीकारा सनातन वैदिक धर्म

बरेली की रहने वाली महक खानम और रिफा बी ने सनातन धर्म की राह चुन ली और दोनों वैदिक रीति रिवाज से विवाह के पवित्र बंधन में बंध गई है। महम की पहचान अब सोनम सक्सेना के रूप में होगी तो रिफा बी इसके बाद रिया सागर के नाम से जानी जायेंगी। महक खानम मूलरूप से रामपुर शहर में मियां खेल की निवासी है महक ने बरेली में मलूकपुर के रहने वाले अंश सक्सेना के साथ विवाह किया। महक से सोनम बनी युवती ने बताया कि हिन्दू धर्म शुरू से उसको अच्छा लगता था। उसका कहना है कि इस्लाम छोड़ सनातन धर्म अपनाने और अंश सक्सेना के साथ विवाह का निर्णय उसने सोच–समझकर, बिना किसी दबाव के किया। इस्लाम से सनातन धर्म अपनाने वाली दूसरी युवती रिफा बी बरेली में थाना देवरनिया क्षेत्र के गांव उदरा की रहने वाली है। उसने अपने ही गांव के राहुल कुमार सागर के साथ विवाह किया है। रिया ने बताया कि कई बातें ऐसी थीं, जिससे वह हिन्दू धर्म को पसंद करती थी। राहुल के साथ विवाह के पवित्र बंधन में बंधने के साथ ही रिफा बी की पहचान अब रिया सागर के रूप में होगी।

मुसलमानों की घर वापसी कैसे कराई जाये?

एक मुसलमान ने कहा कि मैं घर वापसी को तैयार हूं, परन्तु मुझे कारण बताओ कि किस प्रकार हिंन्दू धर्म इस्लाम से श्रेष्ठ और ईश्वर प्रदत्त धर्म है।

क्या हमारे हिन्दू संघठनो में सामर्थ्य है ये सिद्ध कर सके कि इस्लाम अंधविश्वासों, पाखण्ड, झूठी कहानियों, कुतर्को, व्याभिचार, शोषण से भरा हुआ है, और हिन्दू धर्म इन सभी से मुक्त है ?

हम मुसलमानों से कैसे कहे कि मोहम्मद ने जो उंगली दिखा कर चाँद के दो टुकड़े कर दिये थे, वह कथा झूठी है, विज्ञान विरुद्ध, कुतर्क है।

क्योंकि हम स्वयं यह मानते हैं कि हनुमान जी ने सूर्य निगल लिया था, एक राक्षस पृथ्वी को समुद्र में छुपा दिया था।

हम मुसलमानों को कैसे कह दे कि मोहम्मद जिस घोड़ी पर बैठकर जन्नत गया था, उस अल्बुराक नामक घोड़ी का सिर स्त्री का नही हो सकता, यह मिथ्या है।

क्योंकि हम स्वयं यह मानते हैं कि गणेश जी को हाथी का सर लगा था और बुद्धि भी मनुष्य की और वह हाथी के मुँह से मनुष्यों की भाषा बोल भी सकता है। नरसिंह का शरीर मनुष्य का व सिर सिंह का था, वराह नामक देवता का सिर सुअर का था।

हम मुसलमान को कैसे कह दे कि कोई जन्नत नही होती, जहां ७२ हुरें और गिल्में मिलती है, शराब मिलती है, इस्लाम में ये सब लालच दिये गये हैं, जिससे कि वे जिहाद करे और ये सत्य नहीं है।

क्योंकि हमारे हिन्दू भाई, बाबा, साधु संत सभी स्वर्ग नरक की कथाओं को सच मानते हैं, एक इंद्र है, जो नृत्य देखता है, और सोमरस पीता है, कोई भैंसे पर बैठा यमराज है, बही खाता लिखता चित्रगुप्त है, यमदूत है, पवन व अग्नि मनुष्य की तरह दिखने वाले देवता हैं।

दुर्गा माँ के १६ हाथ है, ब्रह्मा के चार मुंह है, शनि नामक कोई देवता कौए की सवारी करता है, गणेश जी (हाथी) चूहे की सवारी करता है, दुर्गा जी (स्त्री) शेर की सवारी करती है, कृष्ण की १६००० रानियां थी, शिव जी भांग पीते थे, स्त्री के मैल से व पुरुष के पसीने से बालक पैदा होता है।

न जाने कितनी कल्पनाओं, कुतर्को, अंधविश्वासों, झूठी कहानियों में डूबा हुआ है हमारा यह हिन्दू धर्म, ये सब षडयन्त्र है हमारे ही बाबाओ की, मक्कार साधु संतों की, हिन्दू रक्षा के नाम पर बनाये गए संगठनो के शीर्ष नेतृत्व की। तुम्हारे पाखण्ड और अंधविश्वास से ही उनकी दुकान चलती है, राजनीति चमकती है।

हिन्दुओं कैसे बुलाओगे विधर्मियों को अपनी ओर कि **आओ उस कीचड़ से निकल कर इस कीचड़ में आ जाओ कि इधर कीचड़ कुछ कम है और बदबू भी कुछ कम है।**

पंडित महेंद्र पाल आर्य (भूतपूर्व इमाम) ने हजारों मुसलमानों की वापसी कराई वेदो के सिद्धांत बता कर स्वामी श्रद्धानंद ने लाखों मुसलमानों की घर वापसी कराई इन्ही वेद के सिद्धांतों के दम पर आज भी हर सप्ताह सैकड़ो हिन्दुओं को वेदों की शिक्षा देकर दृढ़ बना रहे है, आर्य बना रहे हैं।

पवित्र ''वेद'' ही धर्म का मूल रहा है, यही ईश्वरीय वाणी है, यही सत्य सनातन वैदिक धर्म है, इसमें ना जादू टोना है, न चमत्कार, न अंधविश्वास, न पाखण्ड, न पशुबलि, न पाषाण पूजा, न मांसभक्षण। विशिष्ट ज्ञान विज्ञान से भरा हुआ है वेद। वेदों की शिक्षाओं को सरल व सरस भाषा में समझने के लिये महर्षि दयानंद कृत सत्यार्थ प्रकाश व अन्य साहित्य पढ़ें, जिसे पढ़ करअनेक मुसलमानों व ईसाईयों ने वैदिक धर्म को अपनाया है।

– राजेश बरनवाल

आर्यसमाज का सेवक 'श्री हाजी अल्ला रखीया रहीम तुल्ला'

आर्यसमाज ने विभिन्न सम्प्रदायों के अनुयायियों की शुद्धि कर उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित करके उनपर महान् उपकार किये हैं। ईश्वर के सत्य स्वरूप से परिचित कराकर उसको पाने का वेदोक्त मार्ग बतलाना आर्यसमाज का जन सामान्य पर सबसे बड़ा उपकार है। आर्यसमाज के वेदोक्त विचारों ने जहां अपना प्रभाव सत्यप्रेमी और निष्पक्ष जनों के हृदय में स्थापित किया, उन्हीं में इसके एक समर्थक और प्रशंसक श्री हाजी साहब थे।

हाजी साहब कच्छ के रहने वाले थे। पेशे से आप सोने का व्यापार किया करते थे। आप सर्वदा कहा करते थे कि संसार में धर्म वैदिक धर्म ही है। जब कोई आपसे कहता था कि आप शुद्ध क्यों नहीं होते तो आप उत्तर दिया करते थे कि मैं अशुद्ध नहीं हूं। आप आर्यसमाज के सत्संग में नियमपूर्वक जाया करते थे और आर्यसमाज के सिद्धान्तों से अभिज्ञ थे। आप सर्वदा विद्यार्थियों को पुस्तकें और छात्रवृत्ति दिया करते थे। निर्धनों को सहायता आपसे प्राप्त होती थी। आप आर्यसमाज में कई बार अपने पुत्रों को भी ले जाया करते थे। एक बार आपने एक स्नातक से कोई प्रश्न किया था, तो इसका उत्तर उसने गलत दिया। इसकी पुष्टि के लिए जब सत्यार्थप्रकाश मंगवाया और दिखाया तो आपका पक्ष सही सिद्ध हुआ और उस स्नातक ने अपनी गलती स्वीकार की। हाजी साहब ने कहा– आपने तप किया है, जंगल में रहे हैं, और गुरुओं के पास रहे हैं परन्तु आपने ऋषि दयानन्द लिखित वैदिक सिद्धान्तों का परिचय प्राप्त नहीं किया। एक बार मुम्बई आर्यसमाज में तत्कालीन प्रधान श्री विजयशंकर जी ने साप्ताहिक सत्संग में कहा कि मन्दिर के पिछले भाग में मकान बनवाने में आर्यसमाज पर ऋण हो गया है। अब अन्य कार्यों के साथ–साथ आर्यसमाज को यह ऋण भी उतारना होगा। हाजी साहब ने उठकर पूछा कि आर्यसमाज पर ऋण कितना है? प्रधान जी ने कहा रु० ५००० है। हाजी साहब ने तुरन्त कहा कि मेरी दुकान से आकर ले लो। प्रधान जी के जाने पर उन्होंने शीघ्र ही उन्हें ५००० रु० का चौक दे दिया। उस मकान पर जो शिला लगाई गई थी जिस पर दानियों के नाम हैं, उसमें सबसे प्रथम हाजी जी का ही नाम है।

आपके नाम से प्रत्येक उनको वैदिक धर्मी समझने में संकोच करेगा लेकिन हाजी अल्लारखीया रहीमतुल्ला जी उतने ही वैदिक धर्मी थे जितना कि कोई वैदिक धर्मी हो सकता है।

–सार्वदेशिकश १९४२ के अंक से साभार

शुद्धि आंदोलन का इतिहास विस्तार से जानने के लिए पढ़िए–आर्यसमाज और शुद्धि आंदोलन, मूल्य ₹500 मंगवाने के लिए 070155 91564 पर वट्सएप द्वारा सम्पर्क करें। **–प्रियांशु सेठ**

आइए मनाएं आजादी का 78वां साल

वर्षों तक अंग्रेजों की गुलामी करने के बाद आज के ही दिन 15 अगस्त 1947 को हमारा देश भारत आजाद हुआ था। सालों तक हम भारतवासियों ने अंग्रेजों के अत्याचार और अमानवीय व्यवहार को सहा है। जिसके बाद भारत की जनता से खुद को इस अत्याचार से आजाद करने की ठान ली। सभी एकजुट हो गए और खुद को और अपने देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने का साहस जुटाया। अंग्रेजों को हमारे देश से बाहर करके अपने देश को आजादी दिलवाने के लिए देश के अनेक वीरों ने प्राणों की बाजी लगाई, गोलियां खाई और अंत में आखिरकार हम आजादी पाने में सफल हुए। 15 अगस्त की तारीख को हमारा देश आजाद हुआ, इसलिए इस दिन का बहुत अधिक महत्व है। इस दिन हम स्वतंत्र हुए इसीलिए इसे स्वतंत्रता दिवस कहते हैं।

भारत को आजाद कराने में बहुत सारे लोगों का योगदान रहा है। कईयों ने अपनी जान की बाजी तक लगाई लेकिन कुछ ऐसे नाम है जिनका योगदान इतना महत्वपूर्ण है कि इन्हें हमेशा याद किया जाता है। इन्हीं में से कुछ नाम हैं सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, सरदार वल्लभभाई पटेल, गांधीजी, इत्यादी।

इस साल 2024 को हम अपनी आजादी का 78वां जश्न मनाएंगे। इस दिन को हम भारतवासी बड़े ही उत्साह और प्रसन्नता के साथ मनाते आ रहे हैं। इस दिन सभी विद्यालयों, सरकारी कार्यालयों में राष्ट्रीय धवज फहराया जाता है, राष्ट्रगीत गाया जाता है और इन सभी महापुरुषों और शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है। जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए अनेक प्रयत्न किए। इस दिन की खुशी को जाहिर करने के लिए लड्डू और मिठाइयां बांटी जाती हैं। आजादी के इस पर्व को सभी भारतीय अपने-अपने तरीके से मनाते है, जैसे उत्सव की जगह को सजाना, फिल्में देखकर, अपने घरों पर राष्ट्रीय झंडे को लगा कर, राष्ट्रगान और देशभक्ति गीत गाकर, तथा कई सारे सामाजिक क्रियाकलापों में भाग लेकर। भारत की राजधानी दिल्ली में हमारे प्रधानमंत्री लाल किले पर राष्ट्रीय धवज फहराते हैं। वहां यह त्योहार बड़ी धूमधाम और भव्यता के साथ मनाया जाता है। सभी शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है। प्रधानमंत्री राष्ट्र के नाम संदेश देते हैं। अनेक सभाओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। राज्यों में भी स्वतंत्रता दिवस को इसी उत्साह के साथ मनाया जाता है। कुछ लोग सुबह जल्दी ही तैयार होकर प्रधानमंत्री के भाषण का इंतजार करते है।

महात्मा गांधी के अहिंसा आंदोलन की वजह से हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को खूब मदद मिली और 200 साल के लंबे संघर्ष के बाद ब्रिटिश शासन से आजादी मिली। स्वतंत्रता के लिये किये गये कड़े संघर्ष ने उत्प्रेरक का काम किया जिसने ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपने अधिकारों के लिये हर भारतीय को एक साथ किया, चाहे वो किसी भी धर्म, वर्ग, जाति, संस्कृति या परंपरा को मानने वाले हो। यहां तक कि अरुणा आसिफ अली, एनी बेसेंट, कमला नेहरु, सरोजिनी नायडु और विजय लक्ष्मी पंडित जैसी महिलाओं ने भी चुल्हा-चौका छोड़कर आजादी की लड़ाई में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

इस दिन की याद आते ही उन शहीदों के प्रति श्रद्धा से मस्तक अपने आप ही झुक जाता है। जिन्होंने स्वतंत्रता के यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दी। इसलिए हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम हमारी स्वतंत्रता की रक्षा करें। देश का नाम विश्व में रोशन हो, ऐसा कार्य करें। देश की प्रगति के साधक बनें न कि बाधक। हमारा कर्तव्य है कि भारत के नागरिक होने के नाते हम स्वतंत्रता का न तो स्वयं दुरुपयोग करें और न ही दूसरों को करने दें। शहीदों के बलिदान को आने वाले समय में भी जाया न जाने दें और एक भ्रष्टाचार व दुर्गुण रहित देश बनाने में अपने स्तर पर सहयोग करें।

(पृष्ठ 1 का शुद्धि उपन्यास धारावाहिक लेख का शेष)

कहीं अपने पिता की उंगली थामे हुए थे और कहीं वह क्रूस पर लटके हुए थे बहुत आकर्षक और सुंदर मूर्तियां दोनों और बनी हुई थी। पीछे पेड़ों की कतार थी अखिल इस गलियारे को पार करता हुआ गिरजाघर के अंदर पहुँचा। गिरजाघर में पहले बहुत बड़ा हॉल था। बहुत सारी कुर्सियां सलीके से कतारबद्ध लगी हुई थी। और सामने गिरजाघर में यीशु क्रूस पर लटके हुए थे दूसरी तरफ एक और मदर मैरी अपने हाथ में एक बच्चे को गोद में लिए हुए थी। फूलों से बहुत सुंदर सजावट की गई थी। मोमबत्तियां जल रही थी। दस-पंद्रह युवा-युवतियां बैठे थे। एक बारीक नक्काशी की हुई सफेद रंग की विशाल सिंहासन नुमा कुर्सी थी। कुर्सी पर सुनहरे रंग की पालिश से सजावट की गई थी। कुर्सी पर फादर विराजमान थे। पादरी के पास ही भूपेश खड़ा था। नगेन्द्र आने वाले आगंतुकों की सेवा में रत था। पूछने पर पता चला कि भूपेश का नाम अब जॉन फ्राइड और नगेन्द्र का नाम जॉन स्मिथ था। दोनों ने अखिल को देख लिया था। पादरी के उपदेश प्रारंभ हुए-" लेडीज़ एंड जेन्टिलमैन! आप बहुत भाग्यशाली हो कि प्रभु यीशु ने आपको अपने घर बुलाया है। अपनी शरण में ले लिया है। उनकी कृपा हो जाए तो फिर पूरे संसार में किसी अन्य की कृपा की आवश्यकता नहीं। यीशु सबसे दयालु है। आप यदि सच्चे दिल से उनके सामने प्रायश्चित करते हो, माफी मांगते हो तो वो माफ कर देते हैं और हैवन के दरवाजे खोल देते हैं। प्रभु ईशु का संदेश है कि भूखे को खाना खिलाओ, जरूरत मंदों को धन दो, दीन-दुखियों की, अपाहिजों की और बीमारों की सेवा करो। सबकी पीड़ा हरने, सभी प्रकार के दुख-दर्द से छुटकारा दिलाने के लिए यीशु ने आप सबको अपनी गोद में ले लिया है और सुखों का दरवाजा खोलकर दुख, बीमारी और कष्टों को दूर कर दिया है। यीशु ने अपना खजाना खोल दिया है। हम उसको आप तक पहुँचाएगें। तो आप सब कृपा पाने के लिए यीशु की शरण में आये। और खुशियों से झोली भर लीजिए। आप और लोगों को भी अपने साथ लाइये सबको मुफ्त शिक्षा, मुफ्त मकान और मुफ्त इलाज मिलेगा। प्रभु यीशु के दिल में सबके लिए जगह है। वो सबको अपनी गोद में बैठाकर सबके दुख दूर करना चाहते हैं। सबको प्यार करना चाहते हैं तो आओ सब यीशु की शरण में।" क्रोध के अतिरेक को दबाकर अखिल वहॉ से बाहर आया।

अब अन्य विज्ञाप्ति के पते पर गया। मस्जिद में मौलवी साहब धर्म का प्रचार प्रसार कर रहे थे। "मुस्लिम धर्म सबसे पाक है। हिंदुओं के देवी देवता खुद अपनी सहायता नहीं कर पाते, तुम्हारी क्या सहायता करेंगे। अरे शिव की पत्नी सति अपने आप को हवनकुंड में स्वाहा घर देती है तो शिव उसे गोद में उठा कर तीनों लोकों में घूमते रहते हैं। शिव किसी को कुछ भी वरदान दे देते हैं फिर उस राक्षस से बचने के लिए इधर-उधर भागने लगतें हैं तब उनकी रक्षा विष्णु करते हैं। जब शिव अपनी रक्षा नहीं कर सकते तो तुम हिंदुओं की रक्षा कैसे करेगा। देवता राक्षस से बचने के लिए परेशान रहते हैं, इधर-उधर भागते रहते हैं इसकी उसकी सहायता लेते रहते हैं। लेकिन हमारे मौहम्मद साहब किसी से नहीं डरते। अच्छाई चीते की तरह दौड़ती हैं तभी तो आज मुस्लिम धर्म सत्तावन देशों में फैला है। हर आदमी पाक कुरान को पढ़ना चाहता है और पढ़ना भी चाहिए। आसमान से खुद अल्लाह ने उतारी है। अमन के रास्ते पे चलो। कुरान के रास्ते पे चलो। मुस्लिम बन जाओ। जन्नत मिलेगी और जन्नत में बहत्तर हूर मिलेगी।" अखिल घर आ गया। अभी उसे राजन की तलाश और थी। शहर के बड़े बुजुर्ग सही कहते हैं ऐसे तो एक दिन पूरा शहर ही ईसाई और मुसलमान बन जाएगा। लेकिन उपाय किसी के पास कुछ नहीं था। अखिल का अब काम में मन नहीं लगता था। एक शाम वह नहर के किनारे जाकर बैठ गया और अशांत मन को शांत करने के लिए बहते पानी में कंकड़ फेंकने लगा। थोड़ी देर बाद देखा कि गोल टोपी ओढ़े आठ-दस युवा मस्ती करते हुए आ रहें हैं। ध्यान से देखने पर पता चला है और उनमें राजन भी था। जिसे अन्य युवा साथी मोहम्मद रहमान कहकर बुला रहे थे। अखिल दौड़ कर उससे लिपट गया। लेकिन रहमान बुत की तरह शांत खड़ा था। अखिल फिर उसे आलिंगन में ले कर बलपूर्वक बोला -"भाई मैं भी तेरे साथ आना चाहता हूँ। मैं तुझे नहीं छोड़ सकता। बचपन के यार हैं। इतने दिनों में लौटा हूँ। क्या मुझसे मिलेगा भी नहीं? चल आज घर आ जा। वहीं महफिल जमेगी। मैं इंतजार करूंगा। बता क्या खाएगा। मॉ से तेरी मनपसंद भोजन और मिठाई बनवाता हूँ।"

(शेष अगले अंक में)

वेद प्रचार एवं आर्य समाज

— डॉ. विनय विद्यालंकार

विश्व में जहाँ-जहाँ आर्य समाज की इकाइयां अस्तित्व में है वहाँ प्रतिवर्ष श्रावण एवं भाद्रपद (जुलाई-अगस्त) माह में वेद-प्रचार सप्ताह कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। ऐसा हो सकता है कि किसी समाज में सात दिन तक वेद-प्रचार न कर पाते हों परन्तु तीन, पांच या सात दिन (सामर्थ्यानुसार) कार्यक्रम अवश्य आयोजित होते हैं जिनका उद्देश्य आम व्यक्ति तक परमात्मा के वेद ज्ञान को पहुँचाना एवं उसके अनुसार आचरण करने की प्रेरणा देना होता है। भारतवर्ष ऋषि प्रधान देश रहा है। यहीं पर अनेकों ऋषियों ने वेदों की व्याख्या में ब्राह्मण-ग्रन्थ, आरण्यक-ग्रन्थ, उपनिषद्, दर्शनशास्त्र एवं स्मृति शास्त्र की रचना कर मानव जीवन को धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की सिद्धि का मार्ग प्रशस्त किया है। जिस वातावरण का निर्माण महाभारत युद्ध के पश्चात् देश में बना उसमें धर्म एवं अध्यात्म के नाम पर बाह्य प्रदर्शन एवं अवैज्ञानिक, अव्यावहारिक मान्यताओं एवं परम्पराओं का प्रचलन हो गया था।

सत्यार्थप्रकाश की अनुभूमिका (दश समुल्लास के उपरान्त) में ऋषि दयानन्द जी लिखते हैं-''यह सिद्ध बात है कि पाँच सहस्र वर्षो के पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई भी मत न था क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या से अविरूद्ध हैं। वेदों की प्रवृत्ति होने के कारण महाभारत युद्ध हुआ। इनकी प्रवृत्ति से अविद्या-अन्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया मत चलाया।'' ऋषिवर के इस कथन में प्रत्येक वाक्य सारगर्भित है-प्रथम दृष्टि डालते हैं-पांच हजार वर्ष अर्थात् महाभारत युद्ध से पूर्व समस्त विश्व में अर्थात् धरा पर 'वेदमत' के अतिरिक्त कोई मत-मजहब अथवा विचार अस्तित्व में नहीं था। द्वितीय वेदों की ऋचाओं में वर्णित ज्ञान को विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान कहा है। ऋषि दयानन्द की मान्यता है कि वेदोक्त सिद्धान्त यथार्थ ज्ञान पर आधारित है। प्रत्येक पदार्थ, तत्व एवं व्यवहार आदि की सर्वज्ञता किसी एक मनुष्य के मस्तिष्क में होना सम्भव नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि वेदज्ञान अपौरूषेय है अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान है। जब तक वेद-ज्ञान का प्रचार-प्रसार धरा रहा, उसके अनुसार आचरण रहा तब तक समाज एवं राष्ट्रों में प्रेम, सद्भाव, शान्ति, सौहार्द के साथ-साथ भौतिक विकास की स्वस्थ परम्परा रही। सूत्र रूप में कहा जाय तो ''भौतिक एवं आत्मिक' विकास का, धर्म एवं विज्ञान का समन्वय वेदों में ही उपलब्ध होता है। यह समन्वय ही व्यक्ति की व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व का समुचित एवं सुव्यवस्थित विकास व उन्नति कर सकता है। यही आत्मा के उद्देश्य पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म-अर्थ, काम एवं मोक्ष) की सिद्धि करवाने में समर्थ है। मनुष्यकृत ग्रन्थों में वर्णित सिद्धान्त एकदेशीय, काल विशेष, वर्ग विशेष के हितों व कल्याण को दृष्टिगत रखकर स्थापित किए हो सकते है परन्तु वेदज्ञान या वेदमत सार्वभौमिक, सार्वकालिक व सार्वजनीक है यह निर्विवाद सत्य है। इसलिए ऋषिवर ने लिखा वेदमत की अप्रवृत्ति से अविद्या-अन्धकार का विस्तार हुआ और मनुष्य की बुद्धि भ्रमयुक्त हुई और ऐसी अवस्था में अनेक मनुष्यों ने अपने-अपने नये-नये मतों की स्थापना की। वेदमत जहाँ सर्वहित एवं सर्वकल्याण का पोषक है वहीं मनुष्यकृत मत क्षेत्र विशेष व कालविशेष के लिए ही सीमित होते हैं।

अब प्रश्न होता है कि जिस वेद ज्ञान को सूत्र रूप ऋचाओं के माध्यम से परमात्मा ने दिया उसकी व्याख्याएं तो अनेक हैं। कौन सी व्याख्या प्रामाणिक व परीक्षित है? ऋषि दयानन्द जी ने ज्ञान की परीक्षा की कसौटी बताई जिसका प्रयोग कर उचित-अनुचित, सत्य-असत्य, ग्राह्य-त्याज्य का निर्णय मनुष्य कर सकता है। परीक्षा करने की क्षमता प्रत्येक मनुष्य प्राप्त कर सकता है। आवश्यकता इच्छा पैदा करने की है। ऋषिवर सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं-''सब वर्णो के स्त्री-पुरुषों में विद्या और धर्म का प्रचार अवश्य होना चाहिए।'' आज सर्वशिक्षा अभियान के नाम पर 'साक्षरता (अक्षर ज्ञान) तक सीमित कर दिया है। ऋषि ने तो 'सर्वविद्या-अभियान प्रारम्भ किया था। आगे ऋषिवर ने कहा-''अब जो पढ़ना-पढ़ाना हो वह अच्छी प्रकार परीक्षा करके होना योग्य है।'' परीक्षा पांच प्रकार से होती है-

एक-जो-जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और वेदों के अनुकूल हो वह-वह सत्य और उससे विरूद्ध असत्य है।

दूसरी-जो-जो सृष्टिक्रम के अनुकूल वह-वह सत्य और जो-जो सृष्टिक्रम से विरूद्ध है वह सब असत्य है। जैसे कोई कहे 'बिना माता-पिता के योग से सन्तान उत्पन्न हुई' ऐसा कथन सृष्टिक्रम के विरूद्ध होने से सर्वथा असत्य है।

तीसरी-'आप्त' अर्थात् जो धार्मिक विद्वान, सत्यवादी, निष्कपटियों का संग उपदेश के अनुकूल है वह-वह ग्राह्य और जो-जो विरूद्ध वह-वह अग्राह्य है।

चौथी- अपने आत्मा की पवित्रता विद्या के अनुकूल अर्थात् जैसा अपने को सुख प्रिय और दु:ख अप्रिय है वैसे ही सर्वत्र समझ लेना कि मैं भी किसी को दु:ख वा सुख दूँगा तो वह भी अप्रसन्न और प्रसन्न होगा।

पांचवीं-आठों प्रमाण-प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, संभव और अभाव आदि द्वारा सिद्ध हो सके। उक्त पांच स्तरीय परीक्षा द्वारा जो-जो सत्य ज्ञान है उससे ही कल्याण सम्भव है। मनुष्य जीवन की सार्थकता भ्रमित ज्ञान में समय व शक्ति नष्ट करने में नहीं अपितु वेद वर्णित सरल, सहज एवं शाश्वत ज्ञान प्राप्त करने में है।

इसी उद्देश्य व प्रयोजन की सिद्धि हेतु ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज अपने स्थापना के प्रारम्भिक काल में तेजी से विश्वपटल पर विस्तार को प्राप्त हुआ। उसके मूल में 'वेद प्रचार' ही था। स्थान-स्थान पर शास्त्र चर्चा, शास्त्रार्थ व उपदेशादि होते थे। उनका आधार वेद ऋचाएं ही होती थी। वर्तमान दशा यह है कि आर्यसमाज की इकाइयां वेद-प्रचार सप्ताह का आयोजन करती हैं विद्वान बुलाए जाते हैं। कतिपय वेद मनीषियों को छोड़कर शेष अनेक तथाकथित विद्वान सात दिन या पांच दिन का वेद प्रचार केवल कथा-कहानियां, चुटकुले सुनाकर ही सम्पन्न कर जाते हैं। वेद-मन्त्र का उच्चारण मात्र ही प्रारम्भ में होता है। कतिपय समाजों के अधिकारी भी उपदेशक व भजनोपदेशकों को अपना दम्भयुक्त निर्देश देते हुए कहते हैं कठिन उपदेश मत करियेगा मुश्किल से हम लोगों को लाते हैं।

यह दशा सिद्ध करती है कि जिस आर्यसमाज संस्था पर वेद ज्ञान को अन्तिम मनुष्य तक पहुँचाने का दायित्व है वह स्वयं ही दोनों स्थानों पर विराजमान महानुभावों के भ्रमित होने (विद्वान व अधिकारी) के कारण भटक गयी है। आइए इस वेद-प्रचार से पूर्व संकल्प लें इस बार सभी उपदेश-व्याख्यान एवं प्रवचन वेद की ऋचाओं, त्रैतवाद के आर्ष सिद्धान्त की चर्चा को दृष्टिगत रखकर किए जायेंगे तभी यह उद्घोष सफल होगा।

- प्रधान (छाया छात्र)
उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा

(पृष्ठ 2 का लेख 'महर्षि दयानन्द के आर्य समाज...' का शेष)

सत्यासत्य के निर्णयार्थ है, न कि विरोध वा हानि करने के अर्थ। हम लेख को जब जैनी, बौद्ध वा अन्य लोग देखेगें तब सबको सत्यासत्य के निर्णय में विचार और लेख करने का समय मिलेगा और बोध भी होगा।

16. यह बौद्ध जैन मत का विषय बिना इनके अन्य मतवालों को अपूर्व लाभ और बोध कराने वाला होगा क्योंकि ये लोग अपनी पुस्तकों को किसी अन्य मतवालों को देखने, पढ़ने वा लिखने को भी नहीं देते। भला यह किन विद्वानों की बात है कि अपने मत की पुस्तक आप ही देखना और दूसरों को न दिखलाना।

17. जैसा मैं पुराण, जैनियों के ग्रन्थ, बाईबल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देखकर उनमें से गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग तथा अन्य मनुष्य जाति की उन्नति के लिए प्रयत्न करता हूं, सबको करना योग्य है।

18. यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ तथापि जैसा इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूं, वैसा ही दूर देशस्थ वा मतोन्नति वालों के साथ भी वर्त्तता हूँ। जैसे स्वदेश वालों के साथ मनुष्य उन्नति के विषय में वर्त्तता हूँ, वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को भी वर्त्तना योग्य है।

19. वेद, अर्थात् जो जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा की है, उस-उस का हम यशवत् करना, छोड़ना मानते हैं। जिसलिए हम को वेदमान्य है, इसलिए हमारा मत वेद है। ऐसा ही मानकर सब मनुष्यों को, विशेष आर्यो को एक मत होकर रहना चाहिए।

20. संसार में जितने दान है, अर्थात् जल अन्न, गौ, पृथ्वी, वस्त्र, जिन, सुवर्ण और घृत आदि इन सब दानों में वेद विद्या का दान सर्वश्रेष्ठ है।

21. प्राचीन काल में आर्यजन वैदिक संस्कार किया करते थे। वैदिक आचरण युक्त होते थे। इसलिए उनकी संतान में ओज होता था, तेज होता था और शूरवीरता होती थी। परन्तु इस युग में लोग इन्द्रियाराम और विषयानन्द को ही प्रधानता दिये हुए हैं, वैदिक संस्कारों का त्याग कर बैठे हैं। लोगों के घरों में कुरीतियों की भरमार है। इसलिए उनकी संतान भी निस्तेज, दीन, दु:खिया उत्पन्न होती है।

22. हम तो यही मानते हैं कि सत्याभाषण, अहिंसा, दया आदि शुभगुण सब मतों में अच्छे हैं, बाकी वाद-विवाद, ईर्ष्या-द्वेष, मिथ्यायाषणादि कर्म सब मतों में बुरे है। यदि तुम को सत्य मत ग्रहण की इच्छा होतो वैदिकमत को ग्रहण करें।

23. ओ३म् उसका नाम है, जो कभी नष्ट नहीं होता, उसी की उपासना करनी योग्य है। अन्य की नहीं। सब वेदादि शास्त्रों में परमेश्वर का प्रधान व निज नाम ''ओ३म्'' को कहा है, अन्य सब गौणिक नाम है। सब वेद सब धर्म अनुष्ठान रूप तपश्चरण जिसका कथन और मान्य करते और जिसकी प्राप्ति की इच्छा करके ब्रह्मचर्य आश्रम करते हैं, उसका नाम ''ओ३म'' है।

यह लेख भी मैंने आते उपयोगी व उत्तम समझकर श्री अत्तरसिंह जी आर्य ''क्रान्तिकारी'' (प्रधान हरियाणा आर्य युवक परिषद्) द्वारा लिखित ''महापुरुषों की दृष्टि में दयानन्द व महर्षि के सत्यउपदेश ''नामक पुस्तक से उद्घृत किया है। इस पुस्तक में लेखक ने सत्यार्थप्रकाश के आधार पर महर्षि के समस्त विचारों को प्रकट किया है। इतनी उपयोगी पुस्तक को लिखने के लिए मैं ''क्रान्तिकारी'' जी को हार्दिक धन्यवाद देता हूं। साथ ही सुधि पाठकों से भी विनम्र निवेदन करता हूं कि वे इस लेख को खूद मन लगाकर पढ़े ताकि मेरा तथा ''क्रान्तिकारी'' जी का परिश्रम सफल हो सके।

- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स, 180
महात्मा गांधी रोड, द्वितीय मंजिल,
कोलकत्ता-700007, मो. 8232025590

(पृष्ठ 1 का समाचार ''इंदौर में 5 ईसाई सनातन धर्म में....'' का शेष)

परिवर्तित हुआ। रोनाल्डो ईसाई अब राहुल, रोजी अब बुलबुल, मैरी अब ऊषा, रुही अब रितु, एंजल अब आर्यन कहलाएंगे। रोनाल्डो से बने राहुल ने कहा कि वे पहले से ही श्रीराम के भक्त हैं।

(पृष्ठ 1 का समाचार 'बस्तर में 20 लोगों ने..' का शेष)

इनसे संपर्क साधा तो सभी ने 20 वर्ष पश्चात वापस सनातन धर्म में वापसी करने की ठानी। अतः इस उद्देश्य से 12 जुलाई, 2024 एक यज्ञ का आयोजन किया गया और कार्यक्रम में चारों परिवारों के कुल 20 लोगों ने सनातन धर्म को अपना लिया। इस मौके पर महारा समाज के एक नेता ने बताया कि 20 वर्ष पहले ईसाई बने यह लोग से सनातन धर्म से प्रभावित थे और स्वेच्छा से इन्होंने सनातन धर्म में वापसी की है।

जीवन और मृत्यु का अधिष्ठाता

ईशावास्य मिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।। —(यजुर्वेद 49/1)

मन्त्र में बताया है कि यह परिवर्तनशील सम्पूर्ण संसार का एक स्वामी (ईश) है। ज+गत्=जगत्। ज का अर्थ है जन्म लेना और गत् का अर्थ है चले जाना। जहाँ प्राणी जन्म लेता और अन्ततः चला जाता है। इस जन्म और मृत्यु का नियन्ता, अधिष्ठाता भी वही परमात्मा है।.उसी के नियम, व्यवस्था या विधान के अन्तर्गत प्राणी जन्म लेता और मृत्यु को प्राप्त होता है। **(तेन त्यक्तेन, भुञ्जजीथाः)** उस प्रभुदेव के द्वारा प्रदत्त इस संसार के पदार्थों का त्याग पूर्वक उपभोग करो (मागृधः) इसमें आसक्त मत होओ, इन पदार्थों को अपना मानने का लोभ मत करो। **(कस्य स्विद्धनम्)** यह धन किसका है? अर्थात् यह धन किसी का नहीं हुआ, इन धनादि पदार्थों का स्वामी वही ईश्वर है।

बड़े से बड़े दुःख, बड़ी से बड़ी मुसीबतें और कष्ट, करुणा–निधान, करुणाकर प्रभु के स्मरण से कम होते हैं और जाते रहते हैं। वही असहायों का सहाय, निराश्रितों का आश्रय और निरवलम्बों का अवलम्ब है। दुनियाँ के बड़े–बड़े वैद्य, डाक्टर, राजा महाराजा और साहूकार प्रसन्न होने पर केवल शारीरिक कल्याण का कारण बन सकते हैं, परन्तु मानसिक व्यथा से व्यथित नर–नारी की शान्ति के कारण तो वही प्रभु हैं, जो इस हृदय मन्दिर में विराजमान हैं। दुनियाँ के और लोगों की तरह उसका सम्बन्ध मनुष्यों से शारीरिक नहीं, किन्तु मानसिक और आत्मिक है, वही है जो गर्भ में तथा ऐसी जगहों में जीवों की रक्षा करता है, जहाँ मनुष्यों की बुद्धि भी नहीं पहुँच सकती। एक पहाड़ का भाग सुरंग से उड़ाया जाता है, पहाड़ के टुकड़े–2 हो जाते हैं, एक टुकड़े के भीतर देखते हैं एक तुच्छ कीट है जिसके पास कुछ अन्न के दानें पड़े हैं। बुद्धि चकित हो जाती है, तर्क काम नहीं देता, मन के संकल्प विकल्प थक जाते हैं, यह कैसा चमत्कार है, हम स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं। भला इस कठोर हृदय पत्थर के भीतर यह कीट पहुँचा कैसे? और उसको वहाँ ये दाने मिले तो मिले कैसे ! वह आश्चर्य के समुद्र में डुबकियाँ लगाने लगता है। अन्त में तर्क और बुद्धि का हथियार डालकर मनुष्य बेसुध–सा हो जाता है। अनायास उसका हृदय श्रद्धा और प्रेम से पूरित हो गया, ईश्वर की इस महिमा के सामने सिर झुक गया और हृदय से निकल पड़ा कि हे प्रभो! आप विचित्र हो आपके कार्य भी विचित्र हैं। आपकी महिमा समझने में बुद्धि निकम्मी व मन निकम्मा बन रहा है, आप ही अन्तिम ध्येय और आश्रय हो, नाथ ! आपके ही आश्रय में आने से दुःख–दुःख नहीं रहते, कष्ट–कष्ट नहीं प्रतीत होते।

प्रस्तुति– पंकज शाह

माह जुलाई 2024 के आर्थिक सहयोगी-

श्री सुभाषचन्द्र दुआ जी की प्रेरणा से प्राप्त दान राशि-

1.	श्री निर्मल झुनझुनवाला जी यू.एस.ए.	5000/- मासिक
2.	श्रीमती रेखा चौधरी जी, टाटा परिमन्ती सोसाइटी, गुरुग्राम	5000/- मासिक
3.	श्री चिन्तन आर्य जी, समर्पण बंग्लोज, बोडकदेव, अहमदाबाद	5000/- मासिक
4.	श्री नागेश कुमार मित्तल जी गाजीपुर रोड, जिरकपुर मोहाली पंजाब	2000/- मासिक
5.	श्री नवाज सेलिमेन्ट जी अमेरिका	3700/- मासिक
6.	श्री विजय कपूर जी, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली	1100/- मासिक
7.	श्री सोनू आर्य हरसौला, कैथल, हरियाणा	500/-मासिक
1.	ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर-15 ए, फरीदाबाद	1000/- मासिक
2.	आर्य समाज मन्दिर, इन्द्रानगर, बैंगलोर	750/- मासिक

शुद्धि कार्य में आर्थिक सहयोग हेतु

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा को दी गई राशि पर 80 G के अंतर्गत आयकर छूट उपलब्ध है

खाता संख्या– 0154000100352511,
पंजाब नेशनल बैंक,
शाखा कमला नगर, दिल्ली–07,
IFSC-PUNB0015400 पर
सीधे जमा करवा सकते हैं,
तत्पश्चात् फोन न. 8368008215 पर
सूचित करें ताकि आपको
रसीद भेजी जा सके।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा
BHARTIYA HINDU SHUDHI SABHA

शुभ सूचना

शुद्धि सभा को न्यूनतम 1100/- रूपये के दान देकर निम्न पुस्तकों में से कोई पांच (5) का चयन कर सकते हैं और 5 पुस्तकें डाक खर्च सहित निःशुल्क प्राप्त करें।

सेट नम्बर 1

1.	**शताब्दी स्मारिका**	-	500/- रूपये
2.	**आर्य समाज और शुद्धि आन्दोलन**	-	500/- रूपये
3.	**Arya Samaj & Shuddi Movement**	-	300/- रूपये
4.	**हिन्दू संगठन (स्वामी श्रद्धानन्द) अंग्रेजी संस्करण**	-	100/- रूपये
5.	**मैंने ईसाई मत क्यो छोड़ा-आर्यवीर अरूण**	-	50/- रूपये
6.	**वेदों को जाने**	-	300/- रूपये
7.	**सनातन को जानें**	-	150/- रूपये
8.	**मनुस्मृति को जाने**	-	120/- रूपये
9.	**श्री वाल्मीकि प्रकाश**	-	50/- रूपये
10.	**Why I Left Christianity**	-	75/- रूपये

R.N.I.No. 43084/76
Date of Publication 01-08-2024

Delhi Postal R.No. DL (N) 385/2024-26
Posting Date: 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार
अगस्त 2024

धर्मांतरण नहीं रुका तो बहुसंख्यक हो जाएंगे अल्पसंख्यक

इलाहाबाद हाई कोर्ट ने की सख्त टिप्पणी

देश में धर्मांतरण के मामले लगातार आ रहे हैं। अब इस मामले में इलाहाबाद हाई कोर्ट ने सख्त टिप्पणी की है। जिसमें कहा गया कि अगर सब कुछ ऐसा चलता रहा तो एक दिन देश की बहुसंख्यक आबादी अल्पसंख्यक हो जाएगी। कोर्ट की ओर से संविधान के आर्टिकल 25 का हवाला देते हुए धर्म परिवर्तन करने वाली सभाओं पर तत्काल रोक लगाने का आदेश दिया गया है। कोर्ट की ओर से संविधान के आर्टिकल 25 का जिक्र करते हुए कहा गया कि हमारा संविधान हमें किसी भी धर्म को अपनाने और छोड़ना की आजादी देता है। लेकिन उसमें कहीं भी धर्म परिवर्तन कराने की अनुमति नहीं दी गई है। मामले पर सुनवाई करते हुए जस्टिस रोहित रंजन अग्रवाल ने आरोपी कैलाश की जमानत याचिका खारिज कर दी।

शिकायतकर्ता ने आरोपी के खिलाफ कोर्ट में गंभीर आरोप लगाए गए हैं। जिसमें कहा गया कि उत्तर प्रदेश में कुछ धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन कर के गरीब लोगों को गुमराह किया जा रहा है। गांवों से दिल्ली में किसी कार्यक्रम में भाग लेने के लिए लाया जाता है। जिसके बाद कई लोग वापस घर नहीं जाते हैं। लालच से नहीं मानने वालों को डराकर ईसाई धर्म धर्मांतरण करवाया जा रहा है।

यह मामला तब सामने आया जब रामकली प्रजापति के मानसिक रूप से बीमार भाई को दिल्ली लाया गया। उन्हें इस बात का पूरा भरोसा दिलाया गया कि उसके इलाज के बाद उसे वापस घर छोड़ दिया जाएगा। लेकिन कुछ दिनों बाद जब प्रजापति का भाई कैलाश घर नहीं पहुचां तो उनका भरोसा डगमगाना शुरू हो गया। हालांकि कुछ समय बाद उनका भाई कैलाश गांव में वापस आ गया। जिसके बाद फिर से उनके भाई के साथ कुछ लोगों को दिल्ली में होने वाले कार्यक्रम में ले जाया गया। जहां सभी को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया गया। प्रजापति के मुताबिक इसके लिए उन सभी को पैसे भी दिए जाते हैं । उत्तर प्रदेश में धर्मांतरण को लेकर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बेहद ही गंभीर टिप्पणी की है। कोर्ट ने ईसाई धर्म लगातार हो रहे धर्मांतरण को लेकर कहा कि पूरे प्रदेश में यह धर्मांतरण काफी तेजी से चल रहा है। अगर ऐसे ही चलता रहा है तो फिर एक वक्त ऐसा भी आएगा कि जब बहुसंख्यक समाज खुद ही अल्प संख्यक समाज में परिवर्तित हो जाएगा।

हाईकोर्ट ने इस मुद्दे को लेकर कहा कि धर्मांतरण करने वाली धार्मिक सभाओं पर तत्काल रोक लगाई जानी चाहिए। ऐसे आयोजन संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार के खिलाफ हैं। यह अनुच्छेद किसी को भी धर्म मानने और पूजा करने के साथ–साथ अपने धर्म का प्रचार करने की स्वतंत्रता देता है।

एक मामले में दायर जमानत याचिका खारिज करते हुए हाई कोर्ट ने कहा कि धर्म प्रचार की स्वतंत्रता किसी को धर्म परिवर्तन कराने की अनुमति नहीं देती है। जानकारी में आया है कि उत्तर प्रदेश में धार्मिक आयोजनों के जरिए भोले–भाले गरीब लोगों को गुमराह कर ईसाई बनाया जा रहा है। ऐसे में धर्म परिवर्तन कराने के आरोप की गंभीरता को देखते हुए याचिकाकर्ता को जमानत पर रिहा नहीं किया जा सकता है। जमानत खारिज करने का आदेश देने वाले जस्टिस रोहित रंजन अग्रवाल की बेंच ने इस मामले में बड़ी टिप्पणी की है। कोर्ट ने हिंदुओं को ईसाई बनाने के आरोपी और मौदहा हमीरपुर के निवासी कैलाश की जमानत अर्जी खारिज कर दी। कोर्ट ने कहा है कि जमानत की मांग करने वाले पर गंभीर आरोप हैं। उन्होंने कहा कि संविधान धर्म के प्रचार की छूट देता है, लेकिन धर्म बदलवाने की अनुमति नहीं देता है और याचिकाकर्ता पर आरोप हैं कि उसने गांव के तमाम लोगों को ईसाई बना दिया गया है। इस मामले में रामकलि प्रजापति की ओर से दायर की गई थी, जिनके मुताबिक कैलाश नाम का व्यक्ति उनके मानसिक रूप से बीमार भाई को एक हफ्ते के लिए दिल्ली ले गया था और कहा था कि वह उसका इलाज कराकर वापस लाएगा। इलाहाबाद हाई कोर्ट की टिप्पणी, धर्मांतरण की अनुमति दी गई तो एक दिन भारत की बहुसंख्यक आबादी अल्पसंख्यक हो जाएगी। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने कहा है कि यदि धार्मिक सभाओं में धर्मांतरण की प्रवृत्ति जारी रही तो एक दिन भारत की बहुसंख्यक आबादी अल्पसंख्यक हो जाएगी। कोर्ट ने कहा धर्मांतरण करने वाली धार्मिक सभाओं पर तत्काल रोक लगाई जानी चाहिए।

कोर्ट की टिप्पणी– जबरन बनाया जा रहा है ईसाई। यह आदेश न्यायमूर्ति रोहित रंजन अग्रवाल ने हिंदुओं को ईसाई बनाने के आरोपी मौदहा, हमीरपुर के कैलाश की जमानत अर्जी को खारिज करते हुए दिया है। रामकली प्रजापति ने प्राथमिकी दर्ज कराई कि उसका भाई मानसिक रूप से बीमार था,को याची एक हफ्ते के लिए दिल्ली ले गया। कहा इलाज कराकर गांव वापस कर देंगे।

किंतु वापस नहीं आया। जब आया तो गांव के अन्य लोगों को दिल्ली में आयोजित आयोजन में ले गया।जहां उन्हें ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया गया। इसके बदले शिकायत कर्ता के भाई को पैसे दिए जाते हैं। कोर्ट ने कहा , संविधान धर्म प्रचार की छूट देता है, धर्म बदलवाने की अनुमति नहीं है।याची पर आरोप गंभीर है। गांव के तमाम लोगों को ईसाई बना दिया गया है।

आरोप यह है कि लंबे समय तक उसका भाई वापस नहीं आया और जब आया, और जब आया तो गांव के कई लोगों को दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में ले गया और वहां उन्हें ईसाई बना दिया और इसके बदले उन्हें पैसे भी दिए। कोर्ट ने आज आरोपी जमानत देने से सख्त मना किया है।

1923 के शुद्धि आंदोलन मे दो महत्वपूर्ण व्यक्तियों को स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा शुद्धि हुआ

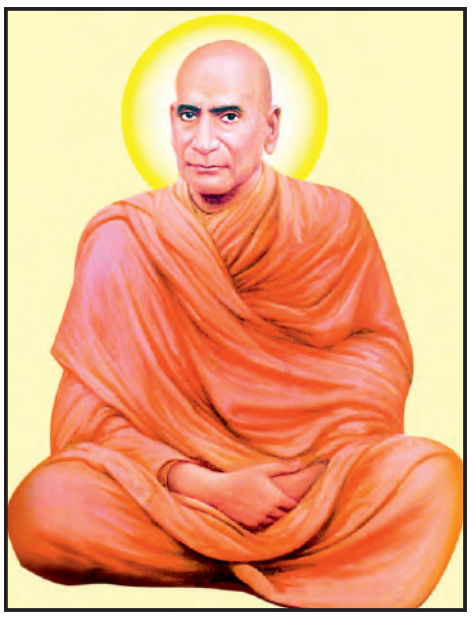

(1) खान अब्दुल गफ्फार खाँ के चचेरे भाई जिनका नाम ठाकुर धर्मसिंह रखा गया और (2) ज्ञानेंद्र सूफ़ी जिसका पुत्र आगाशाही काफ़ी दिनों तक पाकिस्तान के विदेशमंत्री रहे। ज्ञानेंद्र सूफ़ी ने एक वक्तव्य मे कहा था की मै पहले भी शुद्धि करवाया था पर हिन्दुओ द्वारा संदेह के दृस्टि से देखा जाने की वजह से पुनः मुस्लिम बनना पड़ा था,पर अब दोबारा शुद्धि हुई है. दोबारा शुद्धि के बाद वो आजीवन वैदिक बने रहे।

नोट–क्या आर्य समाज इनके परिवार से संपर्क मे रह पायी? आज इनके परिवार मे कोई आर्य सनातनी हो ऐसा तो कोई जानकारी अब है नहीं.कोई आर्य जन को जानकारी है तो बताइये।

राजेश आर्य,
संदर्भ–खट्टी मिट्ठी यादें
लेखक–स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

श्रावणी वेद प्रचार

आर्य समाज बिड़ला लाइन्स (कमला नगर) दिल्ली–7 द्वारा श्रावणी एवं श्रीकृष्ण जन्मोत्सव दिनांक 24–25–26 अगस्त 2024 को बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया जायेगा।

भजन–डॉ. कैलाश कर्मठ (कोलकाता)
प्रवचन–आचार्य राजू वैज्ञानिक
यज्ञ ब्रह्म–कुंवर पाल शास्त्री

– अजय अग्रवाल, मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक–नरेन्द्र मोहन वलेचा द्वारा मयंक प्रिन्टर्स–2199/63, नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली–110005, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7, मो.: 8368008215, 9718550459 से प्रकाशित। सम्पादकः आचार्य गवेन्द्र शास्त्री